## विचार बिन्दु

**अज्ञान जैसा शत्रु दूसरा नहीं। –चाणक्य**

# फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य का अर्थशास्त्र समझना जरूरी

पंजाब के किसान 23 फसलों के लिये न्यूनतम समर्थन मूल्य को कानूनी रूप से बाध्यकारी बनाने की मांग कर रहे हैं। इस मांग पर सार्वजनिक विमर्श के लिये न्यूनतम समर्थन मूल्य के बारे में कुछ बुनियादी चीजें जान लेना जरूरी है। जिन 23 फसलों के लिये यह मांग की जा रही है वे देश की कुल कृषि उपज का 27.8 प्रतिशत है। इन फसलों का भी 80-90 प्रतिशत हिस्सा गेहूं और चावल का है जो देश के पांच-छह राज्यों में होती हैं। इनमें शीर्ष पर पंजाब और हरियाणा हैं। किसानों का आंदोलन वहीं से है। मध्यप्रदेश ने पिछले दस वर्षों में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीद की अपनी प्रणाली बनाई है। छतीसगढ़ ने चावल के लिये ऐसी प्रणाली बनाई है। साथ ही तेलंगाना भी केन्द्रीय पूल में योगदानकर्ता के रूप में उभरा है। आंध्रप्रदेश पहले से इस व्यवस्था में था। उनके साथ राजस्थान और ओडिसा जैसे कुछ पॉकेट्स भी हैं जिनका इस प्रणाली में योगदान होता है। कुल मिला कर न्यूनतम समर्थन मूल्य की प्रणाली से लाभ पाने वाले अधिकतम सात राज्य हैं। हालांकि छतीसगढ़, तेलंगाना और आंध्रप्रदेश इस व्यवस्था का हिस्सा बनना शुरू हो गए हैं मगर पूर्वी भारत के अधिकांश राज्य इससे बाहर हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश, झारखंड से लगा कर पश्चिम बंगाल, असम तक सभी लगभग शून्य हैं। वर्ष 2018-2019 में हुआ एक अध्ययन बताता है कि केवल 8.8 प्रतिशत खेतिहर घरों ने न्यूनतम समर्थन मूल्य के तहत अपनी कोई फसल बेची। उस अध्ययन के बाद के वर्षों में कुछ बढ़ोतरी के बाद अब मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि देश के लगभग 10 प्रतिशत किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रणाली से लाभ पाते हैं। इसलिए यह माना जा सकता है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य देश के अधिकांश किसानों की चिंता का विषय नहीं है। गन्ना अलग तरह की फसल है क्योंकि इसका न्यूनतम समर्थन मूल्य का भुगतान सरकार नहीं करती। यह चीनी मिलों द्वारा भुगतान की जाने वाली राशि होती है। यह जानना भी दिलचस्प होगा कि आठ से नौ प्रतिशत की दर से बढ़ रहे मुर्गीपालन, 7-8 प्रतिशत की दर से बढ़ रहे मत्स्यपालन और 5-6 प्रतिशत की दर से बढ़ रहे दुग्ध उत्पाद जैसे कृषि के अन्य उत्पाद के लिये न्यूनतम समर्थन मूल्य की व्यवस्था नहीं है। वे इसके बिना उन्नति कर रहे हैं। मुर्गीपालन पूरी तरह निजीक्षेत्र द्वारा संचालित हैं। इसमें अनुबंध कृषि है जो पिछले 20-30 वर्षों से परिवर्तनकारी रूप से उभरी है। कृषि का यह सबसे तेज बढ़ता हुआ क्षेत्र है। मछलीपालन में भी यही बात है। हालांकि दुग्ध उत्पादन सहकारी समितियों द्वारा संचालित होता था मगर 2002-2003 के बाद जब से डेयरी क्षेत्र को पूरी तरह लाइसेंस मुक्त कर दिया गया तब से उसका निजी क्षेत्र सहकारी क्षेत्र की तुलना में दोगुनी दर से विकास कर रहा है। वहां भी कोई समर्थन मूल्य नहीं है। वहां बेचने और खरीदने वालों के बीच आपसी समझौता होता है और भाव तय होते हैं। बागवानी क्षेत्र में कोई न्यूनतम समर्थन मूल्य की व्यवस्था नहीं है जो कुल कृषि उपज का 20 प्रतिशत है। इस पृष्ठभूमि में पंजाब के किसानों द्वारा उठाई जा रही 23 फसलों के लिये न्यूनतम समर्थन मूल्य की कानूनी बाध्यकारी बनाने की मांग पर गंभीर सवाल उठना स्वाभाविक ही है।

किसानों की मांग के पीछे उनकी ऊंची आय की भावना तो समझ में आती है लेकिन जिस समर्थन मूल्य के माध्यम से किसान की आय बढ़ाने की मांग की जा रही है वह असहज करने वाली है। यदि यह मांग ज्यों की त्यों मान ली जाती है तो उसके परिणाम देश की अर्थव्यवस्था तथा अन्य उपभोक्ता नागरिकों पर क्या पड़ेगा इस पर आमजन में चर्चा जरूरी है। हालांकि कानूनी बाध्यकारी न्यूनतम समर्थन मूल्य की कुल लागत का अनुमान लगाना बड़ा कठिन हैफिर भी एक बड़े अखबार ने बताया है कि इन 23 फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य की कीमत 10 लाख करोड़ आएगी। इसलिए उसके राजकोष पर पड़ने वाले भार के नतीजों के बारे में भी सोचना होगा। क्योंकि अंततः सरकार को वह फसल बाजार में ही बेचनी होगी। उसे वह किस कीमत पर बेचेगी? इसलिए कुछ कृषि अर्थशास्त्रियों को 23 फसलों के लिये इसे क्रियान्वित करने और संचालित करना व्यावहारिक रूप से असंभव लगता है। न्यूनतम समर्थन मूल्य की गणना के तरीके पर भी किसानों की मांग है। वे चाहते हैं स्वामीनाथन आयोग की मूल सिफारिश के अनुसार यह गणना की जाए इसे सी2 प्लस 50 प्रतिशत कहते हैं। सी2 उत्पादन की वास्तविक लागत है जिसमें बीज, खाद, बिजली और श्रम की कीमत के साथ किसानों के स्वामित्व वाली भूमि और मशीनरी का किराया और ब्याज भी शामिल किये जाने की सिफारिश है। इस लागत में उसका 50 प्रतिशत जोड़ कर कुल लागत बनाई जाने की बात वह आयोग कहता है जिसे पिछली कांग्रेस सरकारों ने भी नहीं माना क्योंकि इसका अर्थ होता समर्थन मूल्य किसानों की लागत का 1.5 गुना निर्धारित किया जाना। यह ऐसा ही है जैसे मैं अपने ही घर में रह रहा हूं तो आप उसका किराया मूल्य लगाएं और उसे लागत के रूप में लें। भारत की 70 प्रतिशत कृषि स्वयं संचालित है। खेती की लागत की गणना के आंकड़ों के अनुसार वह 23 फसलों के लिये 25 से 30 प्रतिशत बैठती है। इससे आम आदमी के भोजन की कीमन 25 से 30 प्रतिशत बढ़ जाने की स्थिति से कैसे निबटा जाएगा? फसलों की कीमतें बढ़ाने का यह रास्ता विश्व ट्रेड ऑर्गेनाइज़ेशन के संदर्भ में भी एक समस्या खड़ी करने वाला होगा। क्योंकि भारत ने वहां इस बात की प्रतिबद्धता दर्शाई है कि वह गेहूं, चावल और अन्य फसलों को एक सीमा तक ही समर्थन देगा। वह पहले से ही अपनी ऊपरी सीमा को छू रहा है। वह उससे ऊपर चला गया तो उसे अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में अपना माल बेचने की वार्ताओं में परेशानी आएगी।किसानों की आय बढ़ाने की मांग तो समझ में आती है लेकिन एक बार में ही 25 से 30 प्रतिशत दाम बढ़ा कर जिस माध्यम से वे ऐसा कराना चाह रहे हैं उससे कोई भी समझदार आदमी सहमत नहीं हो सकता है और अर्थव्यवस्था में बड़ी विकृतियां पैदा करने वाली इस मांग पर शायद ही कोई सरकार सहमत हो सके। हम जानते हैं कि इस समय मुफ़्त भोजन की सब्सिडी 2 लाख 12 हजार करोड़ रुपये है जो इससे बढ़ कर सीधे 2 लाख 75 हजार रुपये पहुंच जाएगी। वह भी केवल गेहूं और चावल पर। अन्य 21 फसलों को लें तो यह आंकड़ा चार-पांच लाख करोड़ पहुंच जाएगा। राजकोषीय घाटे को 5.1 प्रतिशत तक नीचे लाकर सुदृढीकरण की बात छोड़ दीजिए वह बढ़ कर साढ़े छह-सात प्रतिशत पहुंच जाएगा।

**मानसून और बाज़ार की अनिश्चितताओं से किसानों को बचाने के अन्य तरीके भी खोजे जा सकते हैं? एक तरीका है कि जब बाजार में दाम न्यूनतम समर्थन मूल्य से नीचे गिर जाए तब सरकार उसके अंतर की भरपाई करे। इसके लिये मूल्य स्थिरीकरण निधि बनाई जा सकती है। लेकिन अर्थशास्त्री मानते हैं कि बाज़ार को बेहतर बनाना इससे भी अच्छा विकल्प होगा।**

मानसून और बाज़ार की अनिश्चितताओं से किसानों को बचाने के अन्य तरीके भी खोजे जा सकते हैं? एक तरीका है कि जब बाजार में दाम न्यूनतम समर्थन मूल्य से नीचे गिर जाए तब सरकार उसके अंतर की भरपाई करे। इसके लिये मूल्य स्थिरीकरण निधि बनाई जा सकती है। लेकिन अर्थशास्त्री मानते हैं कि बाज़ार को बेहतर बनाना इससे भी अच्छा विकल्प होगा। इसका अर्थ है बुवाई करने से पहले किसान को पता होना चाहिए कि उसके उत्पाद की कीमत चार महीने बाद जब फसल बाज़ार में आएगी तब क्या होने वाली है? इसके लिये वायदा बाजार एक उपकरण हो सकता है जो विकसित दुनिया में प्रचलित है। चीन ने भी अपना वायदा बाज़ार विकसित किया हुआ है। आज भारतीय किसान बीते साल के भावों को देख कर फसलें उगाता है न कि चार माह बाद की फसलों के भावों को ध्यान में रख कर। क्या किसी और प्रकार का भी समर्थन किसानों को दिया जा सकता है उस पर भी सोच जाना चाहिए। एक मॉडल चीन का है जहां किसानों को आय सहायता दी जाती है। उस सहायता की राशि को वे बीज, बिजली, उर्वरक या वे जो भी चाहें उस पर खर्च कर सकते हैं। यह भारत के लिये भी उचित मार्ग हो सकता है। चीन में इसे इनपुट निवेश समर्थन कहते हैं। इसमें किसान को पैसा मिलता है और किसानों को यह तय करने का विकल्प मिलता है कि वह उस पैसे को किस पर खर्च करे। यह मदद बाज़ार और मानसून की अनिश्चितताओं के खिलाफ किसान के लिये बीमे के रूप में उपलब्ध होगी। चीन में भारत से छोटी कृषि अर्थ व्यवस्था है। उनकी जोतें हम से कम हैं। उनका कुल खेती योग्य क्षेत्र हमसे छोटा है फिर भी वे हमारे मुकाबले दोगुने से भी अधिक उत्पादन करते हैं। इसलिए यदि हमें मदद देनी है तो वह उत्पादकता बढ़ाने वाला समर्थन होना चाहिए। उर्वरक और बिजली सब्सिडी को भी इस समर्थन में शामिल किया जा सकता है। साथ में खाद्य सब्सिडी को भी तर्कसंगत बनाना पड़ेगा। साथ ही अभी दी जा रही सब्सिडियों को भी तर्कसंगत बनाना होगा। अभी सरकार एक लाख 88 हजार करोड़ की उर्वरक सब्सिडी और 90 हजार करोड़ की बिजली सब्सिडी देती है। अकेले पंजाब में 9,500 करोड़ की बिजली सब्सिडी है। इसके साथ 2 लाख 12 हजार करोड़ की खाद्य सब्सिडी। यह अतार्किक नीतियों के कारण है। असली समस्या यह है कि देश के किसानों की आय बहुत मामूली बढ़ रही है। पिछले 20 वर्षों की वास्तविक आय कृषि विकास दर 20 वर्षों से 3.5 प्रतिशत रही है। उसमें तेजी लाने की जरूरत है। उसका तरीका कानूनी बाध्यकारी न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं है।

**–अतिथि संपादक,**
**राजेन्द्र बोड़ा**
**( वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक )**

# मानव ह्यूमन जीनोम (Human Genome)

**प्रो. अशोक कुमार**

मानव ह्यूमन जीनोमे (Human Genome) एक जीव विज्ञान शब्द है जो एक व्यक्ति के सम्पूर्ण डीएनए (Deoxyribonucleic acid) को संदर्भित करता है। डीएनए एक अणु है जिसमें अनुवांशिक निर्देश होते हैं जो एक व्यक्ति के सभी लक्षणों और कार्यों को निर्धारित करते हैं।

मानव जीनोमे में लगभग 3 अरब न्यूक्लियोटाइड होते हैं, जो चार रासायनिक इकाइयों (ेंहग्हा,ुल्हग्हा, म्ब्देग्हा, ह्ूप्ब्स्हा) से बने होते हैं। इन न्यूक्लियोटाइड का क्रम जीन बनाता है, जो प्रोटीन बनाने के लिए निर्देश देते हैं। प्रोटीन शरीर के लिए आवश्यक सभी कार्यों को करते हैं, जैसे कि कोशिकाओं का निर्माण और मरम्मत करना, ऊर्जा का उत्पादन करना, और रोगों से लड़ना।

मानव जीनोमे को समझने से हमें यह समझने में मदद मिल सकती है कि मनुष्य कैसे विकसित हुए हैं, विभिन्न रोगों का कारण क्या है, और उनका इलाज कैसे किया जा सकता है। यह हमें नई दवाओं और चिकित्सा उपचारों को विकसित करने में भी मदद कर सकता है।

मानव जीनोमे के बारे में कुछ महत्वपूर्ण तथ्यः– इसमें लगभग 20,000-25,000 जीन होते हैं। यह 23 जोड़े गुणसूत्रों में विभाजित होता है। यह 99.9‰ समान है सभी मनुष्यों में। यह केवल 2‰ कार्यात्मक है, बाकी का हिस्सा गैर-कोडिंग डीएनए है।

यह मानव विकास और स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मानव जीनोमे का अध्ययन जीनोमिक्स नामक एक वैज्ञानिक क्षेत्र में किया जाता है। जीनोमिक्स का उपयोग विभिन्न रोगों, जैसे कि कैंसर, हृदय रोग, और मधुमेह के कारणों और उपचारों की खोज के लिए किया जा रहा है।

मानव जीनोमे के अध्ययन से हमें यह समझने में भी मदद मिल सकती है कि मनुष्य अन्य जानवरों से कैसे अलग हैं और हमें क्या विशेष बनाता है। मानव जीनोम का इतिहास एक लंबा और रोमांचक इतिहास है। यह 1953 में डीएनए की संरचना की खोज के साथ शुरू हुआ, और तब से यह क्षेत्र तेजी से विकसित हुआ है।

1953: जेम्स वॉटसन और फ्रांसिस क्रिक ने डीएनए की संरचना की खोज की। यह एक महत्वपूर्ण खोज थी जिसने हमें यह समझने में मदद की कि जीन कैसे काम करते हैं।

1970: वैज्ञानिकों ने प्रतिबंध एंजाइमों की खोज की, जो डीएनए को काटने के लिए उपयोग किए जा सकते हैं। इसने वैज्ञानिकों को डीएनए अनुक्रमण की प्रक्रिया विकसित करने में मदद की।

1980: मानव जीनोम परियोजना (प्ड्इ) शुरू हुई। यह एक अंतरराष्ट्रीय सहयोग था जिसका उद्देश्य मानव जीनोम के पूरे अनुक्रम को निर्धारित करना था।

1990: वैज्ञानिकों ने मानव जीनोम का पहला आनुवंशिक मानचित्र बनाया। इस मानचित्र ने वैज्ञानिकों को यह पहचानने में मदद की कि गुणसूत्रों पर जीन कहाँ स्थित हैं।

2003: मानव जीनोम परियोजना पूरी हुई। इस परियोजना ने वैज्ञानिकों को मानव जीनोम के पूरे अनुक्रम को निर्धारित करने में मदद की।

2003-वर्तमान: मानव जीनोम के अनुक्रमण के बाद से, वैज्ञानिक जीनोम डेटा का विश्लेषण कर रहे हैं। इस विश्लेषण ने हमें यह समझने में मदद की है कि जीन कैसे काम करते हैं, वे विभिन्न रोगों से कैसे जुड़े होते हैं, और हम उनका उपयोग नई दवाओं और चिकित्सा उपचारों को विकसित करने के लिए कैसे कर सकते हैं। मानव जीनोम का इतिहास अभी भी जारी है। वैज्ञानिक लगातार जीनोम डेटा का विश्लेषण कर रहे हैं और नई खोज कर रहे हैं। यह अनुसंधान हमें भविष्य में कई लाभ प्रदान करेगा। मानव का जीनोम कई जंतुओं से मिलता जुलता है, जिनमें शामिल हैं:–

1. चिंपैंजी: मानव जीनोम चिंपैंजी जीनोम से लगभग 98‰ समान है। इसका मतलब है कि हमारे डीएनए का 98‰ हिस्सा एक समान है। चिंपैंजी हमारे सबसे करीबी जीवित रिश्तेदार हैं, इसलिए यह समानता आश्चर्यजनक नहीं है।

2. बोनाबो: बोनाबो एक अन्य प्राइमेट है जो मानव जीनोम से लगभग 97‰ समान है। बोनाबो चिंपैंजी से हैं, इसलिए यह समानता भी आश्चर्यजनक नहीं है।

3. गोरिल्ला: गोरिल्ला मानव जीनोम से लगभग 93 प्रतिशत समान है। गोरिल्ला चिंपैंजी और बोनाबो से थोड़े दूर के रिश्तेदार हैं, इसलिए थोड़ी कम समानता है।

4. ओरंगुटान: ओरंगुटान मानव जीनोम से लगभग 87प्रतिशत समान है। ओरंगुटान गोरिल्ला से भी थोड़े दूर के रिश्तेदार हैं, इसलिए थोड़ी कम समानता है।

5. गिबन: गिबन मानव जीनोम से लगभग 84प्रतिशत समान है। गिबन अन्य सभी प्राइमेट्स से थोड़े दूर के रिश्तेदार हैं, इसलिए थोड़ी कम समानता है।

6. माउस: माउस मानव जीनोम से लगभग 70प्रतिशत समान है। माउस प्राइमेट्स से बहुत दूर के रिश्तेदार हैं, इसलिए काफी कम समानता है।

7. चूहा: चूहा मानव जीनोम से लगभग 60प्रतिशत समान है। चूहा भी प्राइमेट्स से बहुत दूर के रिश्तेदार हैं, इसलिए काफी कम समानता है।

8. ज़ेब्राफिश: ज़ेब्राफिश मानव जीनोम से लगभग 50प्रतिशत समान है। ज़ेब्राफिश एक मछली है, जो प्राइमेट्स से बहुत दूर के रिश्तेदार हैं, इसलिए काफी कम समानता है।

9. चूहों: चूहों का जीनोम मानव जीनोम के साथ 80प्रतिशत समान है।

10. मक्खियाँ: मक्खियों का जीनोम मानव जीनोम के साथ 60प्रतिशत समान है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि जीनोम में समानता केवल अनुवांशिक समानता को दर्शाती है। इसका मतलब यह नहीं है कि मानव और इन जंतुओं में समान विशेषताएं या क्षमताएं हैं। उदाहरण के लिए, चिंपांजी और बोनोबो बुद्धिमान जानवर हैं जो कुछ हद तक भाषा सीख सकते हैं, लेकिन वे मानव की तरह जटिल भाषा का उपयोग नहीं कर सकते हैं।

इसी तरह, चूहों और मक्खियों में मानव की तरह जटिल मस्तिष्क नहीं होता है, और वे मानव की तरह जटिल विचारों और भावनाओं का अनुभव नहीं कर सकते हैं। मानव जीनोम में कुछ अद्वितीय विशेषताएं भी हैं जो अन्य जानवरों में नहीं पाई जाती हैं। इनमें कुछ जीन शामिल हैं जो मस्तिष्क के विकास और कार्य से जुड़े हैं। ये जीन मानव को अपनी अद्वितीय क्षमताओं जैसे कि भाषा, तर्क और कला के लिए जिम्मेदार माना जाता है।

**मानव ह्यूमन जीनोमे के अध्ययन से अनेक लाभ हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं:--**

**1. रोगों के बारे में बेहतर समझ:** मानव जीनोमे के अध्ययन से हमें विभिन्न रोगों के कारणों और उनसे जुड़े जीनों के बारे में बेहतर समझ प्राप्त होती है। यह जानकारी हमें रोगों के निदान, उपचार और रोकथाम के लिए बेहतर तरीके विकसित करने में मदद करती है।

**2. नई दवाओं का विकास:** जीनोमे के अध्ययन से हमें उन जीनों की पहचान करने में मदद मिलती है जो विभिन्न रोगों से जुड़े होते हैं। यह जानकारी हमें नई दवाओं और चिकित्सा उपचारों को विकसित करने में मदद करती है जो इन जीनों को लक्षित करते हैं।

**3. व्यक्तिगत चिकित्सा:** जीनोमे के अध्ययन से हमें व्यक्तिगत चिकित्सा के लिए नए अवसर मिलते हैं। व्यक्तिगत चिकित्सा में, रोगियों का इलाज उनके जीनोम के आधार पर किया जाता है। यह सुनिश्चित करता है कि रोगियों को सबसे प्रभावी और सुरक्षित उपचार मिले।

**4. मानव विकास और विविधता की बेहतर समझ:** मानव जीनोमे के अध्ययन से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि मनुष्य कैसे विकसित हुए हैं और विभिन्न आबादी समूहों के बीच आनुवंशिक विविधता कैसे उत्पन्न हुई है।

**5. कृषि और पशुपालन में सुधार:** जीनोमे के अध्ययन से हमें पौधों और जानवरों के जीनोम को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है। यह जानकारी हमें अधिक पैदावार वाले और रोग प्रतिरोधी फसलों और जानवरों को विकसित करने में मदद करती है।

**6. नैतिक और सामाजिक मुद्दों पर बहस:** मानव जीनोमे के अध्ययन से कई नैतिक और सामाजिक मुद्दे भी उठते हैं, जैसे कि जीनोम डेटा की गोपनीयता, आनुवंशिक भेदभाव, और प्रजनन चयन। इन मुद्दों पर बहस हमें मानव जीनोमे के अध्ययन के लिए एक जिम्मेदार और नैतिक ढांचा विकसित करने में मदद करती है। मानव जीनोमे के अध्ययन से हमें भविष्य में कई लाभ मिलने की उम्मीद है।

**–प्रो. अशोक कुमार,**
**पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, वैदिक विश्वविद्यालय निंबाहेड़ा, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, अध्यक्ष आईएसएलएस, प्रेसिडेंट, सोशल रिसर्च फाउंडेशन, कानपुर**

# भादरा में 200 पशुओं की मौत, फैल रही गंभीर बीमारी

## पशु चिकित्सा विभाग की टीम ने पशुओं का टीकाकरण किया

- **पशुओं में मुंहपका, खुरपका व निमोनिया के कारण कई पशुओं की मौत हो चुकी है**

**हनुमानगढ़,** (निसं)। जिले के भादरा क्षेत्र के कई गांवों में पशुओं में फैल रही गम्भीर बीमारी को लेकर पशुपालन व चिकित्सा विभाग भी सक्रिय हो गया है। गांव मुन्सरी में गत दिनों में 200 से अधिक पशुओं की मौत को लेकर ग्रामीण पशुपालक हैरान व परेशान हैं। गांव मुन्सरी के सरपंच प्रतिनिधि सुरेन्द्र कुमार बालान ने बताया कि गांव मुन्सरी के पशुओं में मुंहपका, खुरपका व निमोनिया के लक्षण पशुओं में दिखाई दे रहे हैं।

गांव गढड़ा के सरपंच प्रतिनिधि दिलबाग सिंह ने बताया कि 30 से अधिक पशुओं की मौत के बाद स्थिति नियंत्रण में है। पशु चिकित्सा विभाग की टीम ने पशुओं को वेक्सीन का टीकाकरण किया है।

गेांव सुरतर्पुरा के सरपंच प्रतापसिंह बेनीवाल ने बताया कि गांव में पशुओं में मुंहपका, खुरपका व निमोनिया के कारण 80 से अधिक पशुओं की मौत हो चुकी है।

वर्तमान में पशु चिकित्सा विभाग की टीम ने पशुओं में टीकाकरण कर उपचार कर रही है। अभी स्थिति पर नजर रखी जा रही है। गांव मुन्सरी में पशु रोगों की गम्भीरता को देखते हुए पशु चिकित्सा विभाग के चिकित्सक व पशुधन सहायक लगातार पशुओं का उपचार कर रहे हैं। पशुपालन विभाग के संयुक्त निर्देशक डॉ. हरीशचन्द्र गुप्ता ने बताया कि गांव मुन्सरी में स्थिति पर नजर रखी जा रही है। वहीं पर पशु चिकित्सा टीम उपचार के लिए मौके पर है। जयपुर से पशुओं के उपचार के लिए और वैक्सीन भार्दरा पहुंच चुकी है। स्थिति नियंत्रण तक पशु चिकित्सा टीम अपना काम करती रहेगी।

# अरुणाचल प्रदेश में शहीद हुए जवान चरणसिंह का अंतिम संस्कार

- **राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया, शहीद के 10 वर्षीय बेटे ने मुखाग्नि दी**

**जोधपुर,** (कासं)। अरुणाचल प्रदेश में शहीद हुए भोपालगढ़ के कुड़ी ग्राम के जवान चरणसिंह सारण को आज अंतिम विदाई दी गई। दोपहर डेढ बजे पूरे राजकीय सम्मान के साथ शहीद के पैतृक गांव कुड़ी में अंतिम संस्कार किया गया।

शहीद के 10 वर्षीय बेटे प्रवीण ने मुखाग्नि दी। शहीद की पार्थिव देह जैसे ही गांव में आई लोगों ने भारत माता की जय के जयकारे लगाए। गांव में शहीद की अंतिम यात्रा के दौरान जन सैलाब उमड़ पड़ा। शहीद को सेना की टुकड़ी ने सशस्त्र सलामी दी।

गौरतलब है कि जवान चरणसिंह सारण सीमा सड़क संगठन इकाई में तैनात थे। 24 फरवरी को अरुणाचल प्रदेश में ड्यूटी के दौरान अत्यधिक बर्फबारी में हुए एक हादसे में वो शहीद हो गए। मंगलवार दोपहर करीब 11:30 बजे जोधपुर में जल शक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने शहीद को श्रद्धांजलि दी। इसके बाद जोधपुर से कुड़ी गांव तक तिरंगा यात्रा निकाली गई। इस यात्रा में 11 जेसीबी से पुष्प वर्षा की गई। करीब एक बजे जोधपुर से पार्थिव देह गांव पहुंची। शहीद का पार्थिव शरीर घर पहुंचते ही आस-पास के हजारों लोग जुट गए। शहीद के पार्थिव देह पर उनकी पत्नी का विलाप देख आस-पास के लोगों के आखें नम हो गई। शहीद की वीरांगना गीता अपने वीर पति के पार्थिव देह को देखकर के सुधबुध खो बैठी। शहीद के 10 साल का बेटा प्रवीण और बेटी गुनगुन ने अपने पिता के अंतिम दर्शन किए। शहीद को अंतिम विदाई देने के लिए पूर्व राज्यसभा सांसद रामनारायण डूडी, विधायक गीता बरवड़, पूर्व मंत्री कमसा मेघवाल, पूर्व विधायक पुखराज गर्ग, पूर्व जिला प्रमुख मुन्नीदेवी गोदारा, प्रधान शांति राजेश जाखड़ सहित अन्य सैंकड़ों लोग मौजूद रहे।

# भारत की कला को विश्व स्तर पर लोकप्रिय करने 17 राज्यों के कलाकार जैसलमेर में

- **ऐतिहासिक इमारतों को फाइन आर्ट्स के कलाकार अपने कैनवास पर उतार रहे हैं**

**जैसलमेर,** (नि.सं.)। जैसलमेर शहर में इन दिनों ऐतिहासिक इमारतों को फाइन आर्ट्स के कलाकार अपने कैनवास पर उतार रहे हैं। गलियों में कलर लिए एक कोने में बैठे कलाकार जब कैनवास पर जैसलमेर की इमारतों को उकेर कर उनमें रंग भरते हैं, तब आते जाते लोग भी देखकर ठहर जाते हैं। सोनार किला, पटवा हवेली, बड़ाबाग, गड़ीसर लेक आदि सभी इमारतों को अपने कैनवास पर उतारने वाले कलाकार जैसलमेर को दुनिया का सबसे बेहतरीन शहर मानते हैं। जानकारी के अनुसार जैसलमेर में इन दिनों चित्रसूत्र आर्ट अकादमी, महाराष्ट्र के फाउंडर विक्रांत शितोले (43) अपने 45 स्टूडेंट्स और फाइन आर्ट्स के कलाकारों के साथ आए हुए हैं। इन कलाकारों में 17 राज्यों के कलाकार शामिल हैं। फाइन आर्ट्स के माध्यम से ऐतिहासिक इमारतों को कैनवास पर उकेर कर उसमें रंग भरते हैं और इन पेंटिंग को ऐग्जीबिशन में लगाते हैं, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसे देखें। और उसे अपने साथ ले जाए। कई पेंटिंग को पुरस्कार भी मिलते हैं। जिसमें कलाकारों की हौसला अफजाई होती है।

चित्रसूत्र आर्ट अकादमी, महाराष्ट्र के फाउंडर विक्रांत शितोले बताते हैं कि पेंटिंग को ज्यादातर लोग प्रोफेशन के रूप में नहीं अपनाते हैं। मगर कोरोना काल में लोगों ने इसे सीरियसली लिया और उनसे सीखने के लिए ऑनलाइन क्लासेज ली। आज देश दुनिया में उनके हजारों स्टूडेंट है जो फाइन आर्ट के माध्यम से चित्रकारी को सीख रहे हैं। उनका मानना है कि एआई और डिजिटल की दुनिया आ जाने से भी हाथों से बनाई चित्रकारी ज्यादा सजीव और दिल के करीब होती है। क्योंकि उसमें फीलिंग होती है। वे चाहते हैं कि भारत की कला और संस्कृति बहुत ही समृद्ध हो और ये देश दुनिया में फैले। ज्यादा से ज्यादा लोग उनकी चित्रकारी के माध्यम से भारत को जाने और कलाकारी को पहचानें।

विक्रांत और उनकी टीम ने बताया कि वे हैरिटेज को ज्यादा से ज्यादा कवर करते हैं। क्योंकि हैरिटेज दिल को मोह लेता है। प्राचीन इमारतों में की गई कारीगरी और शिल्पकला इंसान को अपनी तरफ बरबस खींचती है। ऐसे में हम लोग देश भर में घूमते हैं और ऐतिहासिक इमारतों के स्केच बनाते हैं। जैसलमेर में भी वे मकानों पर पीले पत्थरों से हुई कारीगरी और ऐतिहासिक इमारतों की शिल्प कला को अपने कैनवास पर उतार रहे हैं। वे इस दौरान अपने स्टूडेंट को सिखाते भी हैं। साथ ही बढ़िया स्केच बनाने के लिए मोटिवेट भी करते हैं। विक्रांत बताते है कि इन पेंटिंग को इकट्ठा कर वे ऐग्जीबिशन लगाते हैं। लोगों को इनवाइट करते हैं। वे बताते हैं कि लोग आते हैं और उनकी बनाई गई तस्वीरों की तारीफ करते हैं। क्योंकि ये बहुत ही सजीव होती हैं और वाटर कलर से हाथों से बनाई होती है। उनकी व उनके स्टूडेंट की बनाई कई तस्वीरों को ऐग्जीबिशन में सराहा गया है। और कई बार इनाम भी मिले हैं। वे कहते हैं कि लोग इनको खरीदते भी हैं।

## राशिफल

**पंडित अनिल शर्मा**

**बुधवार 28 अगस्त, 2023**

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2080, हस्त नक्षत्र दिन 10:22 तक, गंड योग सांय 5:17 तक, बव करण दिन 3:06 तक, चन्द्रमा रात्रि 9:00 से तुला राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थितिः** सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-मकर, बुध-कुम्भ, गुरू-मेष, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से प्रातः 7:33 तक है। आज चतुरथी व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 9:16 पर होगा।

**श्रेष्ठ चौघड़ियाः** लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:52 तक, शुभ 11:14 से 12:40 तक, चर 3:31 से 4:57 तक, लाभ 4:57 से सूर्यास्त तक।

**राहूकालः** 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:56, सूर्यास्त 6:23

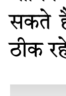

**मेष**

परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

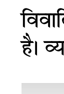

**वृष**

मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।



**मिथुन**

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

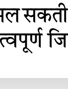

**कर्क**

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

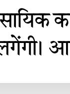

**सिंह**

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

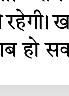

**कन्या**

घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक मामलों में दुविधा बनी रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।



**तुला**

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है।



**वृश्चिक**

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

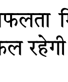

**धनु**

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

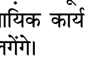

**मकर**

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी और व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।



**कुंभ**

व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

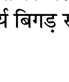

**मीन**

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।